कोड – 11
विषय – हिन्दी साहित्य
निर्धारित समय – 3 घंटे मात्र
कुल – 150 अंक मात्र

नोट : **केवल पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। खण्ड 'एक' और 'दो' से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम खण्ड 'तीन' अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक सामने दिए हुए हैं।**

खण्ड – एक

1. देवनागरी–लिपि में लिखी जाने वाली खड़ी बोली हिन्दी के मानक रूप का, उसकी व्याकरण–गत विशेषताओं के साथ विवेचन कीजिए। (30)
2. अपभ्रंश का भाषिक परिचय देते हुए, हिन्दी के विकास में उसकी भूमिका को सोदाहरण विश्लेषित कीजिए। (30)
3. स्वातन्त्र्य–आंदोलन–काल में हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर आसीन कराने वाली परिस्थितियों का सम्यक् मूल्यांकन कीजिए। (30)
4. रंगमंच की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों की आलोचना प्रस्तुत कीजिए। (30)
5. निम्नलिखित में से किसी एक साहित्यकार का प्रौढ़ साहित्यिक परिचय दीजिए – (30)
   (अ) भीष्म साहनी
   (ब) रेणु

खण्ड – दो

6. हिन्दी आलोचना के विकास क्रम में पं0 रामचन्द्र शुक्ल का योगदान निर्धारित कीजिए। (30)
7. 'श्रद्धा सर्ग' का काव्य–सौंदर्य उदाहरणों के माध्यम से निरूपित कीजिए। (30)
8. बिहारी की लोकप्रियता के कारणों का विश्लेषण कीजिए। (30)
9. 'ब्रह्मराक्षस' कविता का कथ्य क्या है ? इस कविता की विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। (30)
10. हिन्दी उपन्यास–साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए। (30)

खण्ड – तीन

11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए। (10x2=20)
    (क) भारत–भारती।
    (ख) विद्यापति

(ग) हिन्दी कहानी की नवीन भंगिमाएं।

(घ) चिंतामणि।

(ङ) ललित निबंध।

12. निम्नलिखित के कथन और शिल्प का विवेचन कीजिए : (10)

"तुमने वह आर्त पुकार सुनी है। तुम भी न सुनोगे तो सुनने वाले कहाँ से आयेंगे........ अपनी विद्या व बुद्धि को, अपनी जगी हुई मानवता को और भी उत्साह और जोर के साथ उसी रास्ते पर ले जाओ।"

अथवा

"सिहरा तन, क्षरण भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता–ध्यान–लीन राम के अधर,
फिर विश्व–विजय–भावना हृदय में आयी भर,"

* * * *